अध्याय 37

पवित्रस्थान का निर्माण (भाग 2)

अध्याय 36 में पवित्रस्थान के निर्माण के विवरण को अध्याय 37 आगे जारी रखता है। यह बताता है कि बसलेल ने पवित्रस्थान की सजावट किस प्रकार की - वे पवित्र वस्तुएँ जिन्हें निवास-स्थान में रखा गया। यह अध्याय पहले उन वस्तुओं के बनाए जाने के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है जो अति पवित्रस्थान में रखी जानी थी: वाचा का सन्दूक (37:1-5) और सन्दूक पर स्थित प्रायश्चित का ढकना (37:6-9)। यह तब बताता है कि पवित्रस्थान में ये तीन वस्तुएँ - भेंट की रोटियों के लिए मेज़ (37:10-16), सोने की एक दीवट (37:17-24), और धूपवेदी (37:25-28) इनके पात्रों के साथ किस प्रकार तैयार की गई। यह अध्याय यह कहते हुए समाप्त होता है कि बसलेल ने अभिषेक का पवित्र तेल और सुगन्धद्रव्य का धूप भी तैयार किया (37:29)।

पवित्रस्थान का निर्माण करने का विवरण, क्रम के अनुसार इसे बनाने के लिए दिए गए निर्देशों से भिन्नता रखता है। निवास-स्थान का निर्माण किस प्रकार किया जाना चाहिए यह बताने से पूर्व (26:1-37) निवास-स्थान की वस्तुएँ तैयार करने के लिए परमेश्वर ने निर्देश दिए (25:10-40)। निर्माण के विवरण में पहले निवास-स्थान की बात आती है (36:8-38) और फ़िर इसकी सजावट की बात आती है (37:1-29).

इस प्रकार अन्तर क्यों है? स्पष्ट रुप से दिए गए निर्देश एक ऐसे तत्व के साथ आरम्भ होते हैं जो धर्म-विज्ञान के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं - वाचा का सन्दूक और प्रायश्चित का ढकना जो कि परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक हैं।[1] वास्तविक निर्माण के विवरण में प्रायोगिक अथवा तार्किक चीज़ों के बारे में पहले विचार किया जाता है: उदाहरण के लिए सन्दूक का निर्माण करने से पहले इसे स्थापित करने के लिए एक स्थान की आवश्यकता थी। इस कारण पवित्रस्थान के निर्माण का वर्णन, इसकी सजावट की वस्तुओं के विवरण से पहले आता है।

जॉन आई. डरहम ने एक वैकल्पिक विचार का प्रस्ताव रखा जिसमें पवित्रस्थान के निर्माण (36:8-38) और इसे खड़ा करने (40:1-33) के विवरणों को पूर्व विचार के साथ रखा गया जिससे बताए जाने वाले विवरण को कोष्ठक में

व्यवस्थित किया जा सके। आगे भेंटे देने में इस्राएल का प्रत्युत्तर (35:4-36:7) और अपनी आज्ञाओं को पूरा किए जाने के प्रति परमेश्वर का प्रत्युत्तर (40:34-38) बाहरी कोष्ठक के रूप में कार्य करते हैं।[2]

वाचा का सन्दूक (37:1-5)

[1]फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी का सन्दूक बनाया; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी। [2]उसने उसको भीतर बाहर चोखे सोने से मढ़ा, और उसके चारों ओर सोने की बाड़ बनाई। [3]और उसके चारों पायों पर लगाने को उसने सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े एक ओर और दो कड़े दूसरी ओर लगे। [4]फिर उसने बबूल के डण्डे बनाए, और उन्हें सोने से मढ़ा, [5]और उनको सन्दूक के दोनों ओर के कड़ों में डाला कि उनके बल सन्दूक उठाया जाए।

आयतें 1-5. निवास-स्थान के निर्माण का वर्णन करने के बाद (अध्याय 36), लेखक इसकी वस्तुओं को बनाने के बारे में बताता है। पवित्रस्थान में की जाने वाली सजावट में सर्वप्रथम वस्तु वाचा का **सन्दूक** था जो एक बक्सा था जिसमें पत्थर की पटियाएँ थीं जिन पर व्यवस्था लिखी हुई थी (25:16)। सन्दूक को बनाया जाना और जिस प्रकार इसका निर्माण किया गया उस रिकॉर्ड के लिए दिए गए निर्देशों के बीच कोई विशेष अन्तर नहीं हैं, परन्तु इनमें इतना ही अन्तर है कि सन्दूक का विवरण बताता है कि इसमें क्या रखा हुआ था परन्तु जिस प्रकार इसका निर्माण किया गया वह रिकॉर्ड कुछ और नहीं बताता। (25:10-16 पर टिप्पणियाँ देखें।)

प्रायश्चित का ढकना (37:6-9)

[6]फिर उसने चोखे सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को बनाया; उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी। [7]और उसने सोना गढ़कर दो करूब प्रायश्चित्त के ढकने के दोनों सिरों पर बनाए; [8]एक करूब एक सिरे पर, और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर बना; उसने उनको प्रायश्चित्त के ढकने के साथ एक ही टुकड़े के दोनों सिरों पर बनाया। [9]और करूबों के पंख ऊपर से फैले हुए बने, और उन पंखों से प्रायश्चित्त का ढकना ढपा हुआ बना, और उनके मुख आमने-सामने और प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किए हुए बने।

आयतें 6-9. पाठ्य आगे **प्रायश्चित के ढकने** को बनाने के बारे में बताता है जिसने सन्दूक के ढक्कन के रुप में कार्य किया। **प्रायश्चित्त के ढकने के साथ एक ही टुकड़े के** दोनों सिरों पर एक **करूब था** अर्थात एक करूब एक सिरे पर, और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर था। उनके मुख प्रायश्चित्त के ढकने की ओर किए हुए थे जिसमें **उनके पंख** ऊपर से फैले हुए थे और उन पंखों से **प्रायश्चित्त का ढकना** ढपा हुआ था। **प्रायश्चित का ढकना** और **करूब चोखे सोने** से बने हुए थे। एक अर्थ में

प्रायश्चित्त का ढकना बनाने के लिए दिए गए निर्देश और इसके निर्माण के विवरण के बीच मात्र एक अन्तर की सच्चाई यह है कि दिए गए निर्देश 25:22 में प्रायश्चित के ढकने के धर्मविज्ञान विषयक महत्व के बारे में एक वाक्य को शामिल करता है - एक ऐसा कथन जो इसके निर्माण के विवरण में देखने को नहीं मिलता। (25:17-22 पर टिप्पणियाँ देखें।)

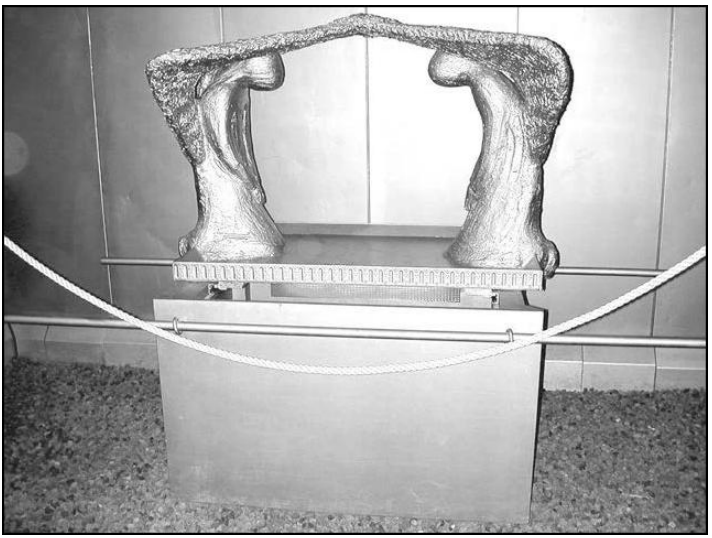

पवित्रस्थान का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

भेंट की रोटियों के लिए मेज़ (37:10-16)

10फिर उसने बबूल की लकड़ी की मेज को बनाया; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी; 11और उसने उसको चोखे सोने से मढ़ा, और उसमें चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई। 12और उसने उसके लिये चार अंगुल चौड़ी एक पटरी, और इस पटरी के लिये चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई। 13उसने मेज़ के लिये सोने के चार कड़े ढालकर उन चारों कोनों में लगाया, जो उसके चारों पायों पर थे। 14वे कड़े पटरी के पास मेज़ उठाने के डण्डों के खानों का काम देने को बने। 15उसने मेज़ उठाने के लिये डण्डों को बबूल की लकड़ी के बनाया और सोने से मढ़ा। 16और उसने मेज़ पर का सामान अर्थात् परात, धूपदान, कटोरे, और उंडेलने के बर्तन सब चोखे सोने के बनाए।

महा पवित्रस्थान की सजावट के लिए तैयार की गई वस्तुओं का विवरण देने के बाद लेखक पवित्रस्थान में पायी जाने वाली वस्तुओं के निर्माण की ओर मुड़ता है। प्रत्येक पवित्र वस्तु का वर्णन बारी-बारी से किया गया है: भेंट की रोटियों के लिए मेज़ (37:10-16), सोने की एक दीवट (37:17-24), और धूपवेदी (37:25-

28)।

हालांकि पवित्रस्थान को बनाने के दो विवरण (निर्देश और निर्माण) क्रम के अनुसार अन्तर रखते हैं, परन्तु प्रत्येक वस्तु सामान्य रुप से समान क्रम में दिखाई देती है। एक अन्तर देखने को मिलता है वह यह है: इन वस्तुओं के निर्माण के लिए दिए गए निर्देशों में भेंट की रोटियों के लिए मेज़ और सोने की दीवट (25:23-40) अनेक अध्यायों के द्वारा धूपवेदी से अलग कर दिए गए (30:1-10) परन्तु इस अन्तर में ये तीनों वस्तुएँ इस अध्याय में समूहबद्ध कर दी गई हैं।

आयतें 10-16. पवित्रस्थान के लिए निर्मित प्रथम वस्तु भेंट की रोटियों के लिए **मेज़** है। सन्दूक के समान यह मेज़ बबूल की लकड़ी से बनी हुई थी और **चोखे सोने ... से मढ़ी हुई थी** (37:10, 11)। इसमें सोने के चार **कड़े** ढालकर चारों कोनों में लगाए गए जिससे **डण्डों** की सहायता से इसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सके (37:13-15)। मेज़ के साथ ही कारीगरों ने **बर्तन** बनाए जिनका प्रयोग पवित्रस्थान की सेवाओं में किया गया (37:16)।

मेज़ के निर्माण का विवरण, इसके निर्माण के लिए दिए गए निर्देशों से किसी विशेष रुप में अन्तर नहीं रखता। फ़िर भी जैसा अन्य विषयों में देखने को मिलता है, आरम्भिक योजना एक कथन शामिल करती है कि 25:30 में मेज़ का प्रयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए था, जिसे बाद का विवरण छोड़ देता है (25:23-30 पर टिप्पणियाँ देखें।)

भेंट की रोटियों के लिए मेज़ का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

सोने की एक दीवट (37:17-24)

17फिर उसने चोखा सोना गढ़ के पाए और डण्डी समेत दीवट को बनाया;

उसके पुष्पकोष, गाँठ, और फूल सब एक ही टुकड़े के बने। 18और दीवट से निकली हुई छः डालियाँ बनीं; तीन डालियाँ उसके एक ओर से और तीन डालियाँ उसके दूसरी ओर से निकली हुई बनीं। 19एक एक डाली में बादाम के फूल के सरीखे तीन तीन पुष्पकोष, एक एक गाँठ, और एक एक फूल बना; दीवट से निकली हुई उन छहों डालियों का यही आकार हुआ। 20और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के समान अपनी अपनी गाँठ और फूल समेत चार पुष्पकोष बने। 21और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो दो डालियों के नीचे एक एक गाँठ दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनी। 22गाँठे और डालियाँ सब दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं; सारा दीवट गढ़े हुए चोखे सोने का और एक ही टुकड़े का बना। 23और उस ने दीवट के सातों दीपक और गुलतराश और गुलदान चोखे सोने के बनाए। 24उसने सारे सामान समेत दीवट को किक्कार भर सोने का बनाया।

आयतें 17-24. सजावट की अगली वस्तु जिसे बसलेल ने पवित्रस्थान के लिए बनाया वह **सोने का दीवट** था। इस वस्तु के लिए प्रायः इब्रानी शब्द מְנוֹרָה (*मिईनोराह)* के द्वारा संकेत दिया जाता है। पवित्रस्थान की अन्य सब वस्तुओं की तुलना में यह **चोखे सोने** से बना हुआ था (37:17)। दीवट में केन्द्र भाग के रुप में एक **डण्डी** थी जिसमें से **छः डालियाँ** निकली हुई थी, **तीन** डालियाँ उसके **एक ओर से** और **तीन** डालियाँ उसके **दूसरी ओर से** निकली हुई थी (37:17, 18)। प्रत्येक भाग को सोने की **गाँठों और फूलों** से सुन्दर तरीके से सजाया गया (37:19-22)। केन्द्र की डण्डी और छः डालियाँ सात दीपक धारकों में से होते हुए ऊपर पहुँचा दी गई।

सोने की एक दीवट का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

इस्राएलियों ने दीवट के सम्बन्ध में आवश्यक **सात दीपक**, **गुलतराश और** अन्य **बर्तन** बनाने में भी **चोखे सोने** का प्रयोग किया (37:23, 24)। दीवट का उद्देश्य -

"इसके सम्मुख के रिक्त भाग में ज्योति दिखाना" (25:37) - इसको बनाने की आज्ञा में बताया गया है परन्तु इसके बनाए जाने के विवरण में नहीं दिया गया है। (25:31-40 पर टिप्पणियाँ देखें।)

धूप वेदी (37:25-28)

25फिर उसने बबूल की लकड़ी की धूपवेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की थी; वह चौकोर बनी, और उसकी ऊँचाई दो हाथ की थी; और उसके सींग उसके साथ बिना जोड़ के बने थे। 26ऊपरवाले पल्लों, और चारों ओर के बाजुओं और सींगों समेत उसने उस वेदी को चोखे सोने से मढ़ा; और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई, 27और उस बाड़ के नीचे उसके दोनों पल्लों पर उसने सोने के दो कड़े बनाए, जो उसके उठाने के डण्डों के खानों का काम दें। 28और डण्डों को उसने बबूल की लकड़ी का बनाया और सोने से मढ़ा।

आयतें 25-28. भेंट की रोटियों के लिए मेज़ के समान **धूप वेदी** का निर्माण **बबूल की लकड़ी** से किया गया और उसे **सोने** से मढ़ा गया। इसके ऊपर **सींग** थे - ये चारों कोनों में से निकले थे - और इसका ऊपर का हिस्सा चारों ओर से **सोने से मढ़ा** हुआ था। निवास-स्थान की अन्य लकड़ी के समान इस वेदी में भी **कड़े** लगे हुए थे जिससे इसे **डण्डों** से उठाया जा सके। इसे बनाने के लिए दिए गए निर्देशों में यह भी शामिल था कि इसे कहाँ रखा जाना है और इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाएगा (30:6-10) परन्तु इसके निर्माण का विवरण मात्र यह बताता है कि इसे तैयार किया गया। (30:1-10 पर टिप्पणियाँ देखें।)

धूप वेदी का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

अभिषेक का तेल और सुगन्धद्रव्य का धूप (37:29)

[29]उसने अभिषेक का पवित्र तेल और सुगन्धद्रव्य का धूप गन्धी की रीति के अनुसार बनाया।

आयत 29. यह अध्याय इस प्रकार बताते हुए समाप्त होता है कि (बसलेल) **ने अभिषेक का पवित्र तेल** और **सुगन्धद्रव्य का धूप तैयार किया**। धूप वेदी के निर्माण के विवरण के बाद इस कथन को स्थापित करना तार्किक लगता है क्योंकि सुगन्धद्रव्य का धूप इसलिए ही तैयार किया गया कि इसे धूप वेदी पर जलाया जा सके। सुगन्धद्रव्य के धूप को बनाने की विधि और इसके प्रयोग के विषय में दिए गए निर्देश 30:34-38 में देखे जा सकते हैं। "अभिषेक के तेल" का प्रयोग इस प्रकार करने के लिए था कि इससे याजकों को और निवास-स्थान को शुद्ध किया जा सके। इसे बनाने और इसके प्रयोग के विषय में विस्तृत निर्देश 30:22-33 में देखे जा सकते हैं।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के निवास-स्थान में आशिषें (अध्याय 37)

निवास-स्थान के लिए सजावट की सामग्री को तैयार करने का वर्णन निर्गमन 37 में किया गया है। जैसा कि मूसा की व्यवस्था "आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब" (इब्रा. 10:1) थी, तब जिस वाचा के अन्तर्गत मसीही लोग जीते हैं उसके सम्बन्ध में उन सजावटों के साथ सम्बन्ध बताना अवैध नहीं है। वर्तमान कलीसिया परमेश्वर का निवास-स्थान है। इसे मसीह के लहू से खरीदा गया (प्रेरितों 20:28) और इसे परमेश्वर के घराने के रूप में चित्रित किया गया है (1 तीमु. 3:15)। इसकी तुलना मन्दिर अथवा निवास-स्थान से की जा सकती है (1 कुरि. 3:16; इफ़ि. 2:19-22)। क्या हम वर्तमान में वे चीज़ें कलीसिया में पाते हैं जो उस समय के निवास-स्थान में पायी जाती थी?

हमें परमेश्वर की दया तक पहुँच प्राप्त है। निर्गमन 37:1-9 वाचा के सन्दूक के निर्माण के बारे में बताता है और फ़िर आगे प्रायश्चित का ढकना और करूबों के बारे में बताने के लिए आगे बढ़ता है। ये वस्तुएँ अति निवास-स्थान की सजावट की वस्तुएँ थी जहाँ परमेश्वर निवास करता था। सन्दूक, वाचा की पटियाओं के एक संग्रहालय के रूप में काम करता था। प्रायश्चित के ढकने पर करूबों के बीच में सन्दूक के ऊपर महायाजक वर्ष में एक बार लोगों के पापों की क्षमा के लिए लहू छिड़कता था। यह वही स्थान था जब परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था।

अति पवित्रस्थान स्वर्ग के समान था अर्थात वह स्थान जहाँ पर परमेश्वर निवास करता है। यह एक घनफ़ल के आकार में था और प्रकाशितवाक्य 21 में स्वर्ग को घनफ़ल के रूप में बताया गया है। जिस प्रकार महायाजक पवित्रस्थान से होकर गए बिना अति पवित्रस्थान में प्रवेश नहीं कर सकता था इसी प्रकार जिन

लोगों को स्वयं का लेखा देना है वे कलीसिया अर्थात मसीह की देह के बचाए हुए लोगों (इफ़ि. 5:23) से होकर गए बिना स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते। अति पवित्रस्थान की सजावट हमें स्मरण दिलाती है कि जो लोग कलीसिया में हैं वे परमेश्वर की दया तक पहुँच प्राप्त करते हैं। मसीही लोग होने के कारण हम मसीह के पश्चातापी लहू से शुद्ध कर दिए गए हैं और अब परमेश्वर की वाचा के साथ बँध गए हैं।

मसीही होने के कारण हमारे पास एक मेज़ है, एक ज्योति है और प्रार्थना है। निवास-स्थान में लकड़ी की वस्तुओं में तीन वस्तुएँ थी: एक मेज़, एक दीवट और धूपवेदी।

निर्गमन 37:10-16 भेंट की रोटियों की मेज़ के निर्माण से सम्बन्ध बताता है। मेज़ पर सदैव बारह रोटियाँ रखी रहती थी जो परमेश्वर की "उपस्थिति की रोटी" (निर्गमन 25:30) कहलाती थी। बारह रोटियाँ सम्भावित रूप से इस्राएल के बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करती थी और मेज़ पर उनकी उपस्थिति यह दर्शाती थी कि वे परमेश्वर के हैं। कलीसिया में, मसीही लोगों के पास एक मेज़ है जो कि परमेश्वर की मेज़ (1 कुरि. 10:21) है। प्रभु भोज, भेंट की रोटियों की मेज़ के समान ही एकदम उसी रूप में नहीं है, परन्तु यह हमें स्मरण दिलाता है कि हम एक हैं और सब पवित्र लोगों को मिलाकर हम मसीह के हैं।

अगली बात यह है, निर्गमन 37:17-24 हमें बताता है कि दीवट को किस प्रकार तैयार किया गया। सोने के दीवट में छः डालियाँ थी जिसमें एक मुख्य डण्डी थी जो सात दीपकों को थामे हुए थी। इन सातों दीपकों को प्रत्येक समय में जलाए रखना आवश्यक था; निवास-स्थान में वे दीपक ही ज्योति देने का काम करते थे। चिन्ह के रूप में, सम्भावित रूप से दीवट एक स्मरण के रूप में कार्य करता था कि मात्र परमेश्वर ही ज्योति उपलब्ध करवाता है - वह ज्योति जो ऊपर से आती है जिसकी आवश्यकता इस्राएल को थी जिससे वह अपने अस्तित्व में निरन्तर बना रह सके। इसी प्रकार कलीसिया में मसीही लोगों के पास ज्योति है - वह परमेश्वर से अर्थात ऊपर से प्राप्त ज्योति है। मसीह को "जगत की ज्योति" (यूहन्ना 8:12) कहा जाता है। परमेश्वर का वचन कलीसिया को ज्योति प्रदान करता है (देखें भजन 119:105)। परमेश्वर के दिशा निर्देश के बिना उसकी कलीसिया के रूप में हम आगे नहीं बढ़ सकते।

तीसरी बात, निर्गमन 37:25-28 धूप वेदी के निर्माण का वर्णन करता है। इस वेदी पर प्रातःकाल और सायंकाल के समय धूप जलायी जाती थी। इसके परिणामस्वरूप सम्भावित रूप से पवित्रस्थान सुगन्धित द्रव्य से भर जाता होगा। निश्चित रूप से धूप की सुगन्ध अति पवित्रस्थान में भी प्रवेश करती थी और इस प्रकार यह परमेश्वर के सम्मुख एक मनभावनी सुगन्ध प्रस्तुत करती थी। मसीही युग में सुगन्धद्रव्य सम्भावित रूप से प्रार्थना को दर्शाती है। प्रकाशितवाक्य 8:3, 4 में, सुगन्ध को "सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं" के साथ जोड़ा गया है। हम जानते हैं कि हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सिंहासन तक ऊपर पहुँचती हैं। सेवा से भरा हमारा जीवन भी इसी प्रकार उसके सम्मुख मनभावनी सुगन्ध के समान बन सकता

है (देखें 2 कुरि. 2:14, 15; फ़िलिप्पियों 4:18)।

उपसंहार। कलीसिया में, निवास-स्थान के समान, हमारे पास मेज़ है और ज्योति है। हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि हम परमेश्वर के सम्मुख सुगन्धित द्रव्य चढ़ा सकें जो उसकी पवित्र उपस्थिति में प्रवेश करता है। कलीसिया के द्वारा, हम परमेश्वर तक, उसकी दया तक और नई वाचा के लाभों तक पहुँच प्राप्त करते हैं। ये आशिषें मात्र उन लोगों के लिए ही उपलब्ध हैं जो कलीसिया में पाए जाते हैं।

निवास-स्थान में पवित्र वस्तुएँ (अध्याय 37)

जिस प्रकार दस आज्ञाओं में से प्रत्येक आज्ञा पर एक सन्देश तैयार किया जा सकता है उसी प्रकार निवास-स्थान में पायी जाने वाली प्रत्येक वस्तुओं पर अथवा उनके प्रयोग पर प्रचार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए कोई भी व्यक्ति "प्रायश्चित के ढकने" पर प्रचार कर सकता है और यह बता सकता है कि किस प्रकार वर्तमान में लोग दया प्राप्त कर सकते हैं। "भेंट की रोटियों की मेज़" पर तैयार किया गया सन्देश, वर्तमान में "प्रभु की मेज़" अथवा "जीवन की रोटी" के रूप में मसीह पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। जिस प्रकार प्रत्येक भोर को अथवा शाम के समय सोने की वेदी पर सुगन्धद्रव्य जलाया जाता था इससे "धूप वेदी" पर तैयार किए गए पाठ से यह बताया जा सकता है कि किस प्रकार मसीही लोगों को निरन्तर प्रार्थना करने की आवश्यकता है । "दीवट" को प्रस्तुत करने में कोई व्यक्ति "संसार की ज्योति" के रूप में मसीह पर बातचीत कर सकता है अथवा परमेश्वर के वचन के द्वारा कलीसिया को उपलब्ध करवाई गई ज्योति के बारे में बात कर सकता है।

सोने के बर्तन (37:16)

निवास-स्थान के बर्तन शुद्ध सोने के बने हुए थे। अगर निवास-स्थान कलीसिया के समान था तो प्रत्येक मसीही व्यक्ति की तुलना सम्भावित रूप से उन बर्तनों से अथवा सामग्री से की जा सकती है जिससे निवास-स्थान तैयार किया गया। परमेश्वर के लोग आन्तरिक रूप से "स्वर्णिम" है; हम लोग बहुत ही मूल्यवान हैं। फ़िर भी यह हम पर निर्भर है कि हमारे मूल्य की पहचान की गई या नहीं। आइए यह सुनिश्चित करें कि हम इस प्रकार जीएँ मानो हम सोने के बर्तन हों जो आग में परखे जाने के लिए भी बने रह सकें (1 कुरि. 3:13; 1 पतरस 1:7) और आदर प्राप्त करने के लिए तैयार किए गए हों (2 तीमु. 2:20, 21)।

दीवट और मण्डली (37:17-24)

प्रकाशितवाक्य 1:20 में आसिया की सात कलीसियाओं की तुलना दीवटों से की गई है। जिस प्रकार निवास-स्थान में दीवट निवास-स्थान के लिए ज्योति उपलब्ध करवाता था उसी प्रकार स्थानीय मण्डलियाँ स्वयं के समुदाय में दिव्य ज्योति का स्त्रोत बनें। जो दीवट अपना कार्य करने में असफ़ल रहता है उसके लिए यह खतरा है कि कहीं उसे उसके स्थान से हटा न दिया जाए (प्रका. 2:5)।

समाप्ति नोट्स

[1]विल्बर फ़ील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 767. जब यह कहा जाता है कि सजावट की वस्तुएँ अधिक महत्वपूर्ण है ऐसा नहीं सुझाता कि स्वयं निवास-स्थान कम महत्वपूर्ण था। [2]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 480.